आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2413 • उदयपुर, सोमवार 02 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नारायण सेवा शाखा सम्मेलन सम्पन्न

नारायण सेवा संस्थान के दो दिवसीय अखिल भारतीय शाखा सम्मेलन में कोविड–19 से प्रभावित गरीब व बेरोजगार परिवारों तक भोजन, राशन और चिकित्सा आदि की निःशुल्क सेवाएं नियमित रखने का निर्णय किया गया।

संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' ने विभिन्न शहरों से आए संस्थान के शाखा प्रभारियों को ऐसे परिवारों का निरन्तर सर्वे करने और उन तक समय पर मदद पहुंचाने को कहा।

सम्मेलन के दूसरे दिन संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल के सान्निध्य में शाखाओं द्वारा चल रहे सेवा कार्यों की समीक्षा की गई। राजमल जी शर्मा आगरा, कैलाश जी चौधरी अहमदाबाद, जतन सिंह जी भाटी दिल्ली, तरूण जी नागदा राजकोट, ललित जी लोहार मुम्बई, अचल सिंह जी सूरत, प्रकाश जी नाथ कोलकाता, मनीष जी खण्डेलवाल जयपुर, महेन्द्र जी रावत हैदराबाद, राकेश जी शर्मा चंडीगढ़, गणपत जी रावल गुड़गांव, जमनाशंकर जी भोपाल ने उनके क्षेत्र में कोरोना काल में अब तक की सेवाओं के प्रतिवेदन प्रस्तुत किए।

राहुल को लगे कृत्रिम पैर

शाहदरा– दिल्ली निवासी एवं संस्थान के विशिष्ट सेवा प्रेरक श्री रविशंकर जी अरोडा ने लॉक डाउन (कोरोना काल) के दौरान दोनों पांवों से दिव्यांग एक युवक के कृत्रिम पैर लगवाए।

दिल्ली के बदरापुर निवासी युवा क्रिकेट खिलाड़ी 2018 में जबलपुर मैच खेलने गए थे। लौटते समय चलती ट्रेन से नीचे गिर पड़े और पांव पहियों के नीचे आकर कट गए थे। कृत्रिम पांव लगने पर राहुल को अब चलने फिरने में किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने संस्थान एवं व उसके विशिष्ट सेवा प्रेरक– अरोडा जी का आभार व्यक्त किया है।

संस्थान द्वारा दिव्यांग दम्पती व बच्चे की मदद

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग धर्माराम (13) और रमेश मीणा (28) को उनकी विपरीत परिस्थितियों में तात्कालिक मदद पहुँचाई है। कानोड़ तहसील जिला उदयपुर (राज.) के तालाब फलां निवासी रमेश पुत्र वाला मीणा का घर आग लगने से स्वाह हो गया था। संस्थान ने अनाज, वस्त्र, कम्बल मसाले आदि देकर उसकी मदद की। रमेश और उसकी पत्नी लोगरी दोनों ही जन्मजात दिव्यांग है। चार बच्चों के साथ गृहस्थी को चलाना, पहले से ही इसके लिए भारी था और अब घर के जल जाने से उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। वहीं मंगलवार को पीआरओ विपुल शर्मा को फुटपाथ पर मिले धर्मा पुत्र कंवरलाल को व्हीलचेयर, कपड़े, बिस्किट एवं राशन देने के साथ उसका सीपी टेस्ट करवाया। इस बालक की दो वर्ष पूर्व बीमारी के दौरान आवाज और आंखों की रोशनी चली गई थी। अब इसके पांव भी नाकाम हो गए है। डॉक्टर्स टीम आवश्यक चिकित्सा के लिए प्रयासरत हैं। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने कहा कि विषमता में परेशान दिव्यांगों एवं दुखियों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए संस्थान तत्पर है। इस अवसर पर विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी मौजूद रहे।

जरुरतमंदों के लिए कृत्रिम अंग सेवा

नारायण सेवा संस्थान की देश–विदेश में स्थित शाखायें भी दिव्यांगजनों को राहत प्रदान करने व सेवा करने में तत्पर हैं। गत 17–18 जुलाई 2021 को ज्वालाजी, जिला– कांगड़ा, (हि.प्र.) की हमीरपुर शाखा द्वारा मातृ सदन, सरस्वती विद्यालय के पास कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगाया गया।

इस शिविर में कुल 68 दिव्यांगजन आये। जिनमें से 28 को कृत्रिम अंग प्रदान किये। तथा 40 को केलिपर्स वितरित किये गये।

शिविर में गरिमामय उपस्थिति श्रीमान् प्रेमकुमार जी धूमल– पूर्व मुख्यमंत्री हि. प्र. (मुख्य अतिथि), श्रीमान् रमेश जी घवाला– पूर्व मंत्री वरमानीया विद्यायक (अध्यक्ष), श्रीमान् रविन्द्र रवि जी– पूर्व मंत्री महोदय (विशिष्ट अतिथि), श्रीमान् रसील सिंह जी मनकोटिया– शाखा संयोजक हमीरपुर, श्रीमान् संजय जी जोशी– पत्रकार, श्रीमान पंकज जी शर्मा एवं श्री रामस्वरूप जी शास्त्री– समाजसेवी पधारे। टेक्निशियन टीम में श्री नरेश जी वैष्णव एवं श्री किशन जी लोहार ने सेवाएं दी। शिविर टीम श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री– प्रभारी, श्री रमेश जी मेनारिया, श्री मुन्ना सिंह जी आदि ने सहयोग किया।

दिव्यांगता–मुक्ति

जितेन्द्र कुमार (17 वर्ष), पिता : श्री शिवजी, शहर : सिमराव /भोजपुर (बिहार)। जन्म से दिव्यांगता जितेन्द्र 15 वर्षों से रेंगती जिन्दगी का भार ढो रहा है। गांव के परिचित से संस्थान के बारे में जानकर पिता श्री शिवजी के मन में पुत्र के चलने की उम्मीद जागी। नारायण सेवा संस्थान में आकर पुत्र की जांच करवायी और जितेन्द्र के एक पांव का एवं दूसरे पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। जितेन्द्र अपनी दिव्यांगता से मुक्ति पाकर प्रसन्न है।

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिश्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मैं और मेरी पत्नी व बेटे को बुखार आने लगा। कोरोना टेस्ट करवाया। हमारी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आ गई। तभी हम सब घर में आइसोलेंट हो गए। हम तीनों बीमार दवाई और भोजन के लिए चिंन्तित थे। तभी मेरे मित्र ने मुझे नारायण सेवा संस्थान की कोरोना किट और घर–घर भोजन सेवा से अवगत कराया। मैंनें दूरभाष से सम्पर्क किया। हमें कोरोना दवाई किट और भोजन पैकेट सुविधा शुरू हो गई। 14 दिनों तक संस्थान से कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं मिली। सुपाचय और रूचिकर भोजन के साथ कोरोना मेडीसन खाकर कोरोना संक्रमण से उबर गए। हम सभी अब पूर्ण स्वस्थ्य है। संस्थान की दिल से धन्यवाद।

– रानू राजपूत, उदयपुर

हार्ट पेशेन्ट मेरे दादा जी एक शादी में गए, वहां उन्हें सर्दी जुकाम की शिकायत हो गई। कोरोना रिपोर्ट करवाई जो कि पॉजिटिव आई। डॉक्टर्स ने होम आइसोलेट रहकर ट्रीटमेंट लेने की बोला। घर पर केयर करने के लिए हमने नारायण सेवा संस्थान से मदद मांगी, तो हमें हेड्रोलिक बेड और ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करवाया। 10 दिनों में दादाजी रिकेवर हो गए। इस सहयोग के लिए संस्थान का आभार।

– प्रेम आहरी, बड़गांव

मेरे पिता जी 5 दिन पहले कोरोना संक्रमित निकले। उन्हेंघर पर रखकर ईलाज शुरू किया लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा। हमारी फिक्र बढ़ने लगी। हॉस्पीटल में ऑक्सीजन बेड के लिए प्रयास किया पर मिला नहीं। मदद के लिए नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। तो उन्होंने ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करा दिया। 2–3 दिन ऑक्सीजन पर रहने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। अब पिता जी पूर्ण कुशल है। विपदा की घड़ी में संस्थान की मदद के लिए हम सदैव कर्तज्ञ रहेंगे।

– मोहन मीणा, डबोक

सम्पादकीय

मानव–जीवन एक अवसर है परमात्मा के विश्वास को सिद्ध करने का। ईश्वर ने जब चौरासी लाख योनियों में से सर्वश्रेष्ठ शरीर मानव का देकर हमें सृजित किया होगा तब शायद सोचा होगा कि मेरी यह .ति श्रेष्ठ कार्य संपादित करेगी। वैसे भी बाकी सब योनियां भोग योनियां हैं, केवल मानव–योनि ही तो कर्म योनि है। इस जीवन में ही पूर्व के कर्मों का शमन, वर्तमान के सद्कार्यों से भविष्य की रचना कर सकते हैं।

प्रश्न यह है कि करें क्या जिससे मुक्ति–पथ प्रशस्त हो ? करना कुछ अतिशय भी नहीं है। हम संसार में रहते हैं, हम पर कई सांसारिक कर्ज हैं। जिन्होंने हमें जन्म दिया, पाला–पोषा, हमारे विचारों और कार्यशैली को स्वरूप दिया है उनके प्रति दायित्वों का निर्वहन हो जाय। अपने तन की व मन की शुद्धि हो जाय बस। तन–मन की शुद्धि के लिये आचरण व साधना दो कार्य हैं। आचरण से हम परोपकारी, करुणाशील, हमदर्द और सेवा–तत्पर बनते हैं तो साधना से ईश्वर के समीप जाकर मुक्ति के लिये प्रयास करते हैं। दोनों हमारे बस में हैं। जब चाहें, जैसा चाहें कर सकते हैं।

कुछ काव्यमय

प्रभु ने दी है देह,
मनुज का रूप दिया है।
इस जीवन का शृंगार,
उसी ने खूब किया है।
हम पर कर विश्वास,
जगत् में भेजा हमको।
पायें दिव्य प्रकाश
मिटा दें अंतर तम को।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

राजा की सीख

एक राज्य का राजा बहुत दयालु था। वह प्रतिदिन सुबह टहलने जाता था। उसे द्वार पर जो भी पहला याचक मिलता था वह उसे उसकी मनचाही वस्तु दान में देता था। यह सुनकर एक लोभी व्यक्ति एक दिन सुबह होते ही राजा के द्वार पर जाकर खड़ा हो गया। जैसे ही राजा ने द्वार पर याचक को देखा तो पूछा हे– बंधुवर! आपको क्या चाहिए? लालची व्यक्ति ने नाटकीय ढ़ंग से कहा राजन, आप जो भी देंगे वह मुझे स्वीकार होगा। तब राजा ने कहा– नहीं आप कुछ बताएंगे तभी मैं दे पाऊंगा।

वह विचार में पड़ गया। उसने राजा से कहा– मुझे सोचने का समय दीजिये। मैं कुछ विचार कर बाद में मांग लूगा। राजा ने सहमति प्रदान कर दी। उसने मन ही मन सोचा कि

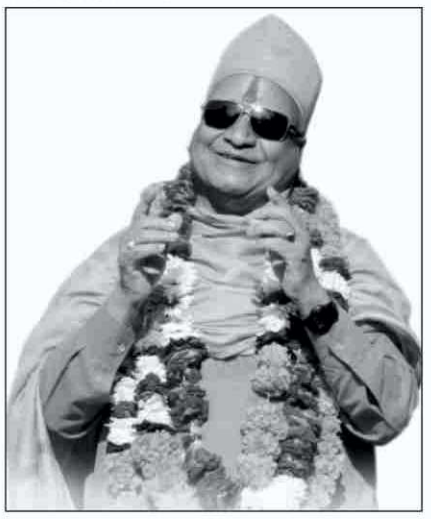

मैं एक याचक हूँ और वह एक राजा । क्यों न पूरा राज– पाट ही मांग लूँ। जिससे फिर जीवन में कभी मांगने की जरूरत ही ना पड़े। राजा जब टहलकर वापस आए और व्यक्ति से पूछा तो उसने शीघ्रता से पूरा पूरा राज– पाट मांग लिया।

राजा ने उससे कहा– हे प्रियवर! आपने तो मेरी पीड़ा दूर कर दी। आपने मुझे भार– हीन बना दिया। इस राजकाज की वजह से न तो मैं ढ़ंग से खा पाता हूँ और न ही सो पाता हूँ। इसने तो मेरा संपूर्ण सुख–चैन ही छीन लिया। इसके कारण मुझे भगवान की भक्ति का भी समय नहीं मिलता है। जिसने मुझे मानव देह के रूप में जन्म लेने का अवसर दिया। हर क्षण मुझे प्रजा की चिंता को आपने पलभर में दूर कर दिया।

मैं आपका बहुत आभारी हूँ और रहूँगा। यह सुनकर लोभी की आँखे खुल गई। उसे राजा की महानता का अनुभव हुआ तथा उसे अपनी ही सोच पर पछतावा हुआ कि राजा होते हुए भी इसे राजपाट का कोई मोह नहीं है जबकि मैं मोह– माया में पड़ गया। वह राजा को प्रणाम कर वहां से चला गया।

– कैलाश 'मानव'

न पालें गलतफहमी

किसी शहर में एक जौहरी की मृत्यु के उपरांत उसका परिवार संकट में पड़ गया। घर में खाने के लाले पड़ गए। एक दिन जौहरी की पत्नी ने अपने बेटे को अपना हीरों का हार देकर कहा–"बेटा, इसे अपने चाचा की दुकान पर ले जाओ और इसे बेचकर कुछ रुपए ले आओ।" बेटा हार लेकर दुकान पर गया।

चाचा ने हार बहुत देर तक अच्छी तरह से जाँचा–परखा और लड़के से कहा – "बेटा, माँ से जाकर कहना कि अभी बाजार जरा मंदा है, थोड़ा रुककर बेचना अच्छा दाम मिलेगा।" उस लड़के को कुछ रुपये देकर अगले दिन से दुकान पर काम करने आने के लिए कह दिया।

लड़का अब रोज दुकान पर जाने लगा और हीरों और रत्नों की परख का काम भी सीखने लगा। समय बीता और वह हीरों व रत्नों का अच्छा पारखी बन गया। दूर–दूर से लोग उसके पास

अपने रत्नों की जाँच करवाने आने लगे। एक दिन उसके चाचा ने उससे कहा –बेटा, अपनी माँ से वह हीरों का हार लेकर आना, अब बाजार में तेजी आ गई है, अच्छे दाम मिल जाएँगे। उसने घर जाकर अपनी माँ से वह हार माँगा और घर पर ही हार को परखा तो पाया कि हार तो नकली था। वह दुकान पर खाली हाथ लौट आया तो चाचा ने पूछा– बेटा, हार नहीं लाए क्या? तब लड़के ने जवाब दिया– वह तो नकली था। इस पर चाचा बोले जब तुम पहली बार वह हार लेकर आए थे, तब अगर मैं उस हार को नकली बता देता तो तुम यही सोचते कि आज हमारे ऊपर जब बुरा वक्त आया तो चाचा हमारी असली वस्तु को भी नकली बता रहे हैं, परंतु आज तुम्हें खुद पता चल गया कि वह हार नकली है। सही व सच्चे ज्ञान के अभाव में मानव किसी भी वस्तु को गलत ही समझेगा और यही गलतफहमी रिश्तों में दूरियाँ ला देती है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश को ज्योतिष में तो कोई दिलचस्पी नहीं थी मगर तरह तरह के लोगों से मिलने में उसे बड़ा मजा आता था, व्यक्ति कैसा भी हो, कुछ न कुछ उससे सीखने को मिल ही जाता है।

कैलाश, पोस्ट मास्टर के साथ ज्योतिषि के घर की तरफ चल पड़ा। घर छोटा ही था, कमरे में सामने ही ज्योतिषि बैठे थे, कैलाश कमरे के बाहर जूते उतार रहा था, ज्योतिषि की निगाहें उसी को घूर रही थी। ज्यूं ही उसने कमरे में प्रवेश कर प्रणाम किया, ज्योतिषि बोल उठे–इन्स्पेक्टर साहब! आपका तो दो–तीन दिनों में स्थान परिवर्तन का योग है।

कैलाश ने उनके समक्ष बैठते हुए कहा कि अभी तो उसे यहां आये दो महीने भी नहीं हुए हैं, सिरोही से घर का सामान आये ही 10–15 दिन हुए हैं, झालावाड़ में ढंग से रहना शुरू ही किया है आप मुझे वापस भेज रहे हैं।

कैलाश को ज्योतिषि की बात पर रत्ती भर भी यकीन नहीं था मगर अपने स्वभाव के अनुसार विनम्र होते हुए ज्योतिषि की भविष्यवाणी का प्रतिकार करने की कोशिश की।

अंश - 75

भुवनेश्वर में राशन–सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है।

आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन– सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत भुवनेश्वर में 14 जुलाई 2021 को आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 100 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गये। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं– मुख्य अतिथि श्री शरदकुमार जी दास (सचिव द ओड़िसा एसोशिएशन फॉर ब्लाइण्ड), विशिष्ट अतिथि श्री शेख समद कड़ापार (कोषाध्यक्ष) श्री कपिल जी साई, श्री रस्सी रंजन जी साहू (समाज सेवी) शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

धूप सेवन लाभदायी

चर्म रोगों में

यदि शरीर पर कोई चर्म रोग या फोड़ा आदि हो जाए तो धूप सेवन से उसमें काफी लाभ मिलता है। चर्म रोग के कीटाणु धूप में नष्ट हो जाते हैं, परंतु इसके बाद गीली मिट्टी को भी बांधना चाहिए। धूप–सेवन में चर्म रोग ग्रस्त स्थान को किसी पतले कपड़े या हरी पत्तियों से ढक दें।

सिर दर्द और खांसी

सिर दर्द और खांसी में भी धूप–सेवन से काफी लाभ मिलता है। धूप–सेवन के कुछ समय पश्चात् सिर पर गीली मिट्टी की पट्टी या जल की पट्टी अवश्य रखें। इससे सिर दर्द शीघ्र ठीक हो जाता है।

जोड़ों के दर्द में

गठिया, वात, जोड़ों के दर्द में गांठों तथा अन्य प्रकार के भीतरी–बाहरी घावों में धूप–सेवन बहुत लाभप्रद और असर करने वाला होता है। इस प्रकार विविध रोगों में धूप–सेवन बहुत ही लाभदायक और जीवनदायिनी सिद्ध हुआ है। धूप की गर्मी से हमारा शरीर स्पंदन करता रहता है। यदि ऐसी जीवनदायी धूप शरीर के रोगों को दूर कर देती है तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

रजिस्टर में लिख दो कैलाश जी का भतीजा उसको बेहोश किया। जनरल एनेस्थिसिया को कोई जानता भी नहीं था। डॉक्टर साहब ने बताया– इसको जी.ए. बोलते है जनरल एनेस्थिसिया। पैर काटे– हाथ काटे। वो ही रोगी लेटा हुआ था। हाथ–पैरों पर चद्दर था, चद्दर जैसे ही हटाया। बच्चे के चेहरे पर मुस्कराहट थी। हे! प्रभु हाथ–पैर कटे फिर भी मुस्कराहट। दर्द दूर होने का इन्जेक्शन दे दिया था– सहज मुस्कराहट। वो रोने वाली माताजी ब्राह्मणी देवी, इसके हाथ नहीं पैर नहीं, फिर भी बच्चा मुस्करा रहा है। मैंने कहा– रोने से भी क्या होगा? रोओगे तो रोते रहोगे। कौन परवाह करेगा? रोने वाले के पास भी कोई जाना नहीं चाहता। पण्डित जी की पत्नी ने कहा– ऐसा तो मैंने पहली बार देखा है। मुझे मालूम नहीं था कैलाश जी ऐसे भी लोग दुःखी होते हैं। दोनों हाथ नहीं, दोनों पैर नहीं कैसे जीयेगा। कृत्रिम अंग लग जायेंगे। कह तो दिया पर मुझे मालूम नहीं था। कहाँ लगते हैं? कहाँ मिलेंगे? एक दूसरे रोगी भाई मिल गये। जिनके दोनों जमाई दोनों बेटियाँ अहमदाबाद थी। कार ले के मिलने आये। एक दिन रहे डॉक्टर साहब ने कहा– कैलाश जी इनको कहो, खून चढ़ाना है। ससुर जी है दोनों के, दोनों बेटियों के पिताजी है खून खढ़ाना है। पहले तो खून का टेस्ट किया, टेस्ट कराने के लिये राजी नहीं हुए। बड़ी मुश्किल से राजी कराया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 202 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023